पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द से संवेदना तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

हिन्दी हमारी पहचान हमारी शक्ति

‘समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम’

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

रचनाकार :-
अमृता शुक्ला

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा
शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - **अमृता शुक्ला**

परिवार -

संस्कारों का प्रथम विद्यालय

परिवार : संस्कारों का प्रथम विद्यालय

मानव जीवन अति मूल्यवान है। इसकी कीमत धन-दौलत के कारण नहीं, बल्कि इसमें छिपे ज्ञान, बुद्धि और संस्कार की संपन्नता से आंकी जाती है। सामान्यतया संस्कार शब्द से एक शिष्ट, शालीन, चरित्रवान छवि का बोध होता है, किंतु संस्कार शब्द का अर्थ—सुधार, परिष्कार, संशोधन, कृत्य, शुद्धि आदि के साथ-साथ संस्कृति भी होता है। संस्कृति शब्द की व्याख्या प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अलग-अलग की गई है। एक विद्वान ने संस्कृति को परिभाषित करते हुए कहा है—संस्कृति वह समष्टि है, जिसे कोई देश या जाति अथवा समाज अपना उद्देश्य या आदर्श निश्चित करके उसे प्राप्त करने के लिए मानव के आध्यात्मिक तथा शारीरिक, मानसिक रूप से मज़बूत बने और अपने लक्ष्य प्राप्त करने में सफल हो। इसके लिए आवश्यक है कि व्यक्ति को सही वातावरण मिले।

परिवार में हर किसी को अपनी बात कहने, अपना धर्म मानने की आज़ादी है। सामूहिक हित की जगह व्यक्तिगत हित की बात होती है। संयुक्त परिवार की परंपरा में बुजुर्गों की छत्रछाया में निश्चित दिनचर्या में बच्चे और बड़े बिना बोझिल हुए शांतिपूर्ण और प्रेम के साथ समय बिताते थे। अनुशासन के साथ-साथ अपनापन भी मिलता था। घर के नियम-कायदे होते थे, जिनका पालन करना ज़रूरी था।

कहते हैं कि शिशु की प्रथम पाठशाला उसका घर होती है और प्रथम गुरु माता-पिता। सब मिल-जुलकर अपना समय व्यतीत करते।

जिस परिवार में प्रेम और विश्वास है, स्वस्थ वातावरण है, वहाँ पर बच्चा भी सकारात्मक विचारों से युक्त होता है। यहीं के वातावरण से उसमें संस्कार के बीज अंकुरित होते हैं। घर की सीख के आधार पर ही यह जाना जा सकता है कि वह बाहर किस तरह का व्यवहार करता है। वह आस-पास के वातावरण से प्रभावित होता है। अन्य रिश्तेदारों और पास-पड़ोस के लोग बालक के संपर्क में आते हैं। बालक उन सबसे भी सीखता है। इसके बाद जब वह पढ़ने जाता है, तब वहाँ के शिक्षक, मित्र और पाठशाला का वातावरण उसके जीवन को प्रभावित करते हैं। मूलतः मानव के विचारों और कार्यों को उनके संस्कार, वंश-परंपराएँ ही दिशा दे सकती हैं। यदि अच्छा वातावरण मिला है, तो वह सही मार्ग पर चलता है। अच्छी संगति का अर्थ है—ऐसे सत्पुरुषों के साथ निवास, जिनके विचार अच्छी दिशा की ओर ले जाएँ।

पुराने समय में गलती करने पर घर में सज़ा देना या स्कूल में शिक्षक के द्वारा पीटना बुरा नहीं समझा जाता था, न ही बुरा लगता था। ये परवरिश का हिस्सा था। टीचर मारते थे, तो माता-पिता उसे बच्चे के लिए शिक्षक के आशीर्वाद की तरह लेते थे। शिक्षक और छात्र, पालक और बच्चे, सभी में एक-दूसरे के प्रति सम्मान का भाव था। बच्चों और बड़ों में एक-दूसरे के लिए सम्मान था। सबके पास समय था, सबकी बात सुनने का समय था। वे बच्चे युवा होकर वहीं वातावरण ग्राह्य कर लेते हैं। घर में सबकी परेशानियाँ भी सभी मिल-जुलकर हल कर दी जाती थीं। सीधा-सरल, बिना दिखावे का रहन-सहन, व्यवहार था। रिश्तेदार, पड़ोसी भी सभी अपने थे। कैरियर के विकल्प नहीं थे। इसलिए वे अपने गाँव, शहर में साथ रहते थे।

हम सामाजिक प्राणी हैं। हम अपने लोगों के साथ जुड़े हुए हैं। तब स्वाभाविक है कि हम उनके बारे में सोचते हैं, उनके लिए चिंतित होते हैं। बड़े-बुजुर्गों को जीवन भर बच्चों के लिए अपना कर्तव्य निभाने के लिए बहुत समझौते करने होते हैं, त्याग करते हैं। ऐसे में स्वाभाविक रूप से वे सबसे अपेक्षाएँ करने लगते हैं। जब संयुक्त परिवार था, सभी साथ रहते थे, बच्चे बड़ों का आदर-सम्मान करके आशीर्वाद प्राप्त करते थे। वो पीढ़ी रिश्तों का महत्व समझती थी और यह भी जानती थी कि वे सभी जो बोल रहे हैं, उसमें हमारी भलाई ही छिपी है। वे इन बड़ों की अपेक्षाओं पर खरे भी उतरते थे।

आज का वातावरण बहुत बदल चुका है। तकनीकीकरण के कारण गैजेट्स सामने आ गए हैं। एकल परिवार में माँ-पिता दोनों नौकरी-पेशा हैं। आर्थिक, सामाजिक दबाव के कारण वे कई उलझनों में घिरे रहते हैं। उनके पास समय नहीं है। बच्चों को गैजेट्स और आया के भरोसे पाला जाता है। एकल परिवार के कारण बुज़ुर्गों की छाया से वंचित रहते हैं। अधिक कमाई से बच्चों की हर फ़रमाइश पूरी करके उसे ज़िद्दी और उच्छृंखल बना रहे हैं। पालक स्कूल में टीचरों के पढ़ाने में, सज़ा देने में दखलंदाज़ी करते हैं, उन्हें डाँट पड़वाते हैं, जिससे वे बच्चे और शह पाते हैं। ऐसे बच्चों को न उन्हें डाँट सकते हैं, न कुछ बोल सकते हैं।

आज बच्चों और युवा पीढ़ी में संस्कारों की कमी के पीछे पाश्चात्य संस्कृति, संयुक्त परिवारों का टूटना और तकनीक का अत्यधिक उपयोग (मोबाइल/सोशल मीडिया) प्रमुख कारण हैं। पश्चिमी जीवनशैली, बड़ों के प्रति आदर की कमी और फैशन/मौज-मस्ती पर अधिक ध्यान देने से नैतिक मूल्यों में गिरावट आ रही है, जिसका परिणाम बढ़ते अपराध और मानसिक तनाव है। वे अश्लील वीडियो देखते हैं। लेकिन कभी-कभी घर के अच्छे संस्कारों के बाद भी बच्चा बुरी संगत में पड़ जाता है। चोरी करता है, मारपीट करने लगता है। फ़िल्में भी असर डालती हैं और वह उसके नायक जैसे बनने की कोशिश करता है। जल्द ही अमीर बनने, ऐशो-आराम की जिंदगी जीने के लिए वह गलत तरीके अपनाने लगता है। कहते हैं, बुरे काम का बुरा नतीजा। अपराध की दुनिया में जिंदगी छोटी होती है और अंत जल्द ही हो जाता है।

लेकिन कोरोना काल में यह परिवर्तन हुआ है कि सभी लोग एक साथ रह रहे हैं। उन्हें बुजुर्गों की अहमियत समझ आई है और परिवार का महत्व भी। जिससे सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न हुआ था।

वर्तमान में अधिक पढ़ाई, नए कैरियर होने, बच्चों को पढ़ने, नौकरी करने के लिए शहर से, देश से बाहर भेजना शुरू हुआ, तब से आपसी संबंधों में मधुरता खत्म हो गई और वे बच्चे आत्मकेंद्रित हो गए। सिर्फ अपने लिए जीना, अपने लिए सोचना, अपने लिए आगे बढ़ना ही विशेष हो गया। बच्चों का व्यवहार भी बदल गया। ऐसे में यदि माँ-बाप उन्हें उनके जीवन में अपना योगदान दिलाने की याद कराएँ, तो उनका यही कहना है कि इसमें कौन-सी बड़ी बात हो गई, ये तो सभी करते हैं।

सकारात्मक सोच जीवनी शक्ति है, जो आगे बढ़ने में मदद करती है। इसका मतलब है कि किसी भी परिस्थिति का सामना करने की ताकत आत्मविश्वासी होने से उत्पन्न होती है। हमारी सकारात्मक सोच हरदम जीत जाने का भाव रखती है कि हम इस कठिनाई को ज़रूर पार कर लेंगे, हमारी पहचान ज़रूर बनेगी, हमारी परिस्थितियाँ अवश्य ठीक होंगी। कहते हैं, हम जिस तरह की बात करते हैं, वो सारी ब्रह्मांड तक जाती है। इसलिए ऐसा हो चुका है या ऐसा ही होगा वाली बात कहें, तो सब कुछ ठीक होगा।

मेरे विचार से बच्चों को सही दिशा देने में बाल-साहित्य बहुत महत्वपूर्ण है। पहले और आज के घर-परिवार, स्कूल के वातावरण में बड़ा बदलाव आ गया है। आज बच्चे स्कूल की किताबों के अलावा दूसरी किताबें नहीं पढ़ पाते, क्योंकि एक तो पढ़ाई के कारण समय नहीं है और दूसरी उनकी पढ़ने की आदत नहीं है। उन्नत टेक्नोलॉजी के चलते वे लोग टीवी, मोबाइल पर कहानी, कार्टून देख लेते हैं। बच्चों के व्यक्तित्व के विकास के लिए हमें उन्हें प्रेरित करना होगा कि वे हर त्योहार, जन्मदिन पर एक पौधा रोपें और एक अच्छी पुस्तक खरीदें। दो साल पहले मेरी छपी बाल कविताओं की किताब खेल-खेल में सीखो में यही कुछ अपनी बात में लिखा है।

- डॉ. अमृता शुक्ला

लेखक परिचय

नाम –   अमृता शुक्ला

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.........**अमृता शुक्ला**.........जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।
उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...